IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

खेलों पर आधारित महिलाओं पर केंद्रित हिन्दी फिल्मों का विषय-वस्तु विश्लेषणातम्क अध्ययन

दीपक ,

शोधार्थी,

डॉ. अमित सांगवान

सह-प्रध्यापक

पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग,

चौधरी देवी लाल विश्वविद्यालय, सिरसा

सारांश:

सिनेमा आज के समय मे जनसंचार का सशक्त माध्यम है जो समाज पर एक गहरा प्रभाव छोड़ता है। सिनेमा अच्छे समाज का निर्माण करने में निरंतर अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता आ रहा है।वर्तमान समय में सभी लोग फिल्में देखते हैं और फिल्में सभी के जीवन पर किसी न किसी तरह की प्रभाव छोड़ती है। फिल्मो को देखने के बाद दर्शकों का अपने आसपास समाज में चीजों को देखने का नजरिया प्रभावित होता है। फिल्मों में डायरेक्टर अपने तरीके से या कहें स्वयं के नजरिये से समाज को दिखाने की कोशिश करता है। जब भारतीय फिल्म उद्योग में पहला चलचित्र बनाया गया था तब किसी भी महिला ने फिल्म में कार्य नही किया था। उस समय फिल्म में महिला की भूमिका भी एक पुरूष ने अदा की थी। लेकिन धीरे-धीरे समय के बदलने के साथ महिलाओं को भी समाज में पुरुषों के बराबर समझा जाने लगा और महिलाएं हर क्षेत्र में आगे रहने लगी। भारत में महिलाओं ने उन खेलों के क्षेत्र में भी नाम कमाया जिन खेलों को पुरूष प्रधान खेल समझा जाता था उसमें भारत की महिला खिलाड़ियों ने देश के लिए गोल्ड जीता। सिनेमा ने भी इस परिवर्तन को पर्दे पर बेहतरीन ढंग से पेश किया और कुछ फिल्में भारत की महिला खिलाड़ियों के जीवन पर बनाई गई हैं, जिसमें महिलाओं के कामयाब खिलाड़ी बनने तक के उनके परिश्रम को बडी सहजता और सुन्दरता के साथ प्रदर्शित किया गया है। ऐसी फिल्में महिला सशक्तिकरण में अपना योगदान देती हैं तथा पूरे समाज में उपस्थित लोगों को महिलाओं के प्रति अपनी मानसिकता बदलने के लिए प्रेरित करती है। प्रस्तुत शोध पत्र में खेलों पर आधारित महिलाओं पर केंद्रित चर्चित हिन्दी फिल्मो का विषय-वस्तु विश्लेषणनात्मक अध्यन्न किया गया है।

बीजक शब्द: फिल्में, खेल, महिलाएं, सिनेमा, जीवन, सशक्तिकरण।

परिचय:

फिल्में जीवन में अपना व्यापक प्रभाव छोड़ती हैं। आधुनिक युग का सिनेमा केवल मनोरंजन का साधन मात्र नहीं है बल्कि ज्ञान का भी बड़ा माध्यम बन चुका है। भारतीय सिनेमा का इतिहास उन्नसवीं शताब्दी के पहले का है। 'ल्यूमियर ब्रदर्स' ने 7 जुलाई, 1896 को मुंबई (पूर्व में बॉम्बे) के 'वाटसन होटल' में पहली बार चलचित्र दिखाया था।ल्यूमियर ब्रदर्स के इस चलचित्र से प्रभावित होकर 'हरिश्चन्द्र श्खाराम भाटवडेकर' ने इंग्लैंड से कैमरा मंगवाकर भारत में फिल्म का निर्माण शुरू किया और अपनी पहली लघु फिल्म वर्ष 1899 में'रेसलर' बनाई जिसमे कुश्ती मैच की सरल रिकॉर्डिंग की गई थी और वहां से भारतमें फिल्मो का इतिहास शुरू हुआ। वर्तमान समय में तकनीक ने सिनेमा को इतना आसान बना दिया है कि अबलोगों को फिल्म देखने के लिए कहीं दूर जाने की जरूरत नहीं है बल्कि फिल्में मानव के पास मोबाईल, सीडी, डीवीडी व इंटरनेट आदि माध्यमों के जरिये उपलब्ध है। भारत में फिल्म निर्माण मुख्य केंद्र बॉलीवुड है। आज के समय में कई प्रकार की शैलियों में फिल्में बनाई जाती हैं जैसी एक्शन फिल्म, ड्रामा फिल्म, हास्य फिल्म, बायोपिक फिल्म यानि जीवन पर आधारित यह फिल्में समाज के हर वर्ग पर प्रभाव छोड़ती हैं।

फिल्म एक शब्द है जो लैटिन पेलिसिकला से आता है और इसके अलग-अलग उपयोग हैं। इसका सबसे सामान्य अर्थ सिनेमेटोग्राफी कार्यों से जुड़ा है जो आमतौर पर एक पटकथा लेखक द्वारा लिखित या अनुकूलित कहानी के रूप में किया जाता है और जिसका मंचन एक निर्देशक द्वारा किया जाता है।

बायोपिक को हिंदी में जीवनी चलचित्र कहा जा सकता है जिसका मुख्य उद्देश्य एक वास्तविक, गैर-काल्पनिक व्यक्ति के जीवन का चित्रण करना है । एक बायोपिक किसी व्यक्ति के पूरे जीवन या उसके इतिहास के एक विशिष्ट क्षण को प्रदर्शित कर सकती है ।

भारत में बायोपिक के प्रचलन ने 'भाग मिक्खा भाग' फिल्म से शुरुआत की थी और उसके बाद विभिन्न लोगों के जीवन पर आधारित फिल्मों को दिखाया गया और उन फिल्मों ने हिन्दी सिनेमा में कमाई के मामले में इतिहास रच दिया। बायोपिक फिल्मो में ज्यादातर वास्तविक व्यक्ति के जीवन को लोगों तक सिनेमाई रूप में पहुंचाने के लिए एक निर्देशक अपने समूह के साथ कार्य करता है इस प्रकार की फिल्मों को बनाने में एक निर्देशक द्वारा चित्रचरित्रण से ज्यादा वास्तिविक धटनाओं पर ध्यान केंद्रित किया जाता है।

शोध उदेश्य:

1- खिलाड़ियों के जीवन पर आधारित बॉलीवुड हिन्दी फिल्मों का अध्ययन करना।

2- हिन्दी सिनेमा में खेल पर आधारित हिन्दी फिल्मों का वस्तुनिष्ठ अध्यन्न करना।

3- खेल पर आधारित हिन्दी फिल्मों के दर्शन का पता लगाना।

शोध पद्धति:

इस शोध को करने में विषय-वस्तु विश्लेषणातम्क अध्यन्न शोध पद्धति का प्रयोग किया गया है यह एक ऐसी शोध प्रविधि है जिसके माध्यम से लिखित, वाचिक अथवा दृश्य संदेशों का विश्लेषण किया जाता है। इस प्रविधि के अंर्तगत खेलों पर आधारित महिलाएं केंद्रित हिन्दी फिल्मों का अंतर्वस्तु विश्लेषणकिया गया है यह एक लघु शोध है जिसके कारण विषय-वस्तु विश्लेषणातम्क अध्ययन को अधिक विस्तृत रूप प्रदान नही किया गया है।

खेलों पर आधारित महिलाएं केंद्रित हिन्दी फिल्मों का विषय-वस्तु विश्लेषणातम्क अध्यन्न:

जब भी किसी फिल्म का निर्माण किया जाता है तो उसकी निर्माण प्रक्रिया को कई चरणों में विभाजीत किया जाता है। विकास,प्री-प्रोडक्शन, निर्माण, पोस्ट-प्रोडक्शन, वितरण आदि इन सभी चरणों के अनुरूप फिल्म का निर्माण किया जाता है। फिल्म निर्माण के पहले चरण विकास में विस्तृत रूप से लेखन का कार्य किया जाता है, दूसरे चरण में प्री-प्रोडकशन से संबंधित फिल्म निर्माण में विभिन्न तरह की भूमिका निभाने वाले सदस्यों को चुना जाता है फिल्म निर्माण के तीसरे चरण उत्पादन में फिल्म से संबंधित सभी तरह के आयामों को एकत्रित किया जाता है। फिल्म निर्माण की अगले चरण पोस्ट-प्रोडक्शन में फिल्म का फिल्मांकन व उसका संपादन किया जाता है। इसके अंतिम चरण वितरण में फिल्म को लोगों के लिए सिनेमाघरों में प्रर्दशित किया जाता है। यह सभी चरणों को पूरा करके एक अच्छी फिल्म का निर्माण किया जाता है।(Hurbis-Cherrier, 2007)

आज के समय में सिनेमा में कई प्रकार की फिल्मों का निर्माण होता है। हिन्दी सिनेमा में कई कामयाब लोगों कि आत्मकथा पर फिल्मों का निर्माण किया जा रहा है जो समाज को जीवन में आने वाली चुनौतियों से लड़ने में सकारात्मक उर्जा व अच्छे विचार प्रधान करती हैं। भारत में महिलाओं का जीवन एक समय में घर तक सीमित रहा है लेकिन कुछ महिलाओं ने खेलों में अच्छा प्रर्दशन कर भारत का नाम ही रोशन नही किया इसके साथ ही महिलाओं में सकरात्मक उर्जा का प्रवाह किया है करते हुए प्रेरणा बनी हैं। ऐसे ही खेल से जुड़ी कुछ महिलाओं को निर्देशकों ने अपनी फिल्मों के जरिए उनकी सफलता के संघर्ष को दुनिया को बताया है। प्रस्तुत शोध पत्र भी ऐसी महिला खिलाड़ियों के जीवन पर आधारित फिल्मों से सम्बंधित है। आइए अब चर्चा करते है कुछ बायोपिक फिल्मों कि जो भारत की महिला खिलाड़ियों से सम्बंधित हैं।

मैरी कॉम -:

'मैरी कॉम' फिल्म का निर्माण 2014 में हुआ था। यह एक मुक्केबाज महिला खिलाड़ी के जीवन पर आधारित हिंदी-भाषा की एक खेल फिल्म है जिसका निर्देशन 'ओमंग कुमार' द्वारा किया गया था और वायकॉम 18 मोशन पिक्चर्स और 'संजय लीला भंसाली' द्वारा मिलकर इसे निर्मित किया गया था फिल्म में 'प्रियंका चोपड़ा' ने मुख्य अभिनेत्री का किरदार निभाया है। इस फिल्म में 'मणिपुर' राज्य के इंफाल के एक किसान की बेटी चंगेइजैंग कॉम के जीवन को दर्शाया है। खिलाड़ी का पिता किसान चावल कि खेती कर घर का पालन-पोषण करता है। वर्ष 1991 में कांगथेई में एक हवाई दुर्घटना के अवशेषों में चंगेइजैंग कॉम को बॉक्सिंग करने के दस्ताने मिलते है जिन्हे वह लेकर घर चली जाती

है, जिसपर उसके पिता नाराजगी व्यक्त करते है। चंगेइजैंग कॉम अपने पिता की नाराजगी के बावजूद गहरी दिलचस्पी लेते हुए आगे बढ़ती है। जैसे-जैसे वह बड़ी होती है वैसे-वैसे उसका मुक्केबाजी के प्रति प्रेम बढ़ता जाता है और वो लड़के के साथ लड़ाई करते-करते एक मुक्केबाजी की एकेडमी में पहुंच जाती है और वहां उसकी मुलाकात मुक्केबाज प्रशिक्षक से होती है तथा चंगेइजैंग कॉम उन्हें मुक्केबाजी सिखाने का आग्रह करती है। आस-पास उपस्थित लोग हंसते हैं तब वह उनसे पूछते हैं कि कोई पांच चीज बताओ जिनसे मैं तुम्हे मुक्केबाजी सिखाऊं। तब मैरी कॉम चार बार बोलती है "आइ लव बाक्सिंग" और फिर पूछती है कि अगली बताने कि जरूरत है ?और उसके बाद मैरी का प्रशिक्षण शुरू होता है। मैरी के घर एक गाय होती है जिससे कर्जदार ले जाते है और उससे वापिस लाने के लिए 'मैरी' एक लडाई में हिस्सा लेती है। वह मार सहकर भी पैसे एकत्रित करती है और पैसे चुकाकर गांव को वापस लाती है।'मैरी' को वहां एक लड़का मिलता है जो उससे पूछता है कि तुम्हे डर नही लगता तो मैरी कहती है कि डर क्या होता है? जब वह अपना पहला राज्य स्तरीय मैच खेलने बहार जाती है तो उसके प्रशिक्षक द्वारा उसका नाम बदलकर 'मैरी कॉम' रखा जाता है और वही से शुरू हो जाता है 'मैरी' का विश्व महिला मुक्केबाज बनने का सफर इस बीच मैरी को विभिन्न तरह कि लोगों की बातों से लड़ना पडता है।वह पहली बार गोल्ड जीतकर राज्य स्तरीय चैम्पियन बनती है और जब सुबह अखबार में उनकी फोटो आती है तो उनके पिता उनसे खूब नाराज हो जाते है। वह करते हैं कि तुम मुक्केबाजी और पिता में से एक चीज चुनो। तब मैरी बॉक्सिंग चुनती है उसके बाद वग पहली बार चैन्नई में 2001 मे पहली महिला राष्ट्रिय चैम्पियन बनती है। फिर विश्व चैम्पियन बनती है विश्व चैंपियन बनने के बाद जब वो शादी करने का फैसला करती है तो उनका कोच उनसे नाराज हो जाता है और उसके बाद वह मुक्केबाजी पर ध्यान नहीं दे पाती। फिर मैरी दो जुड़वा बच्चों को जन्म देती है। जब घर का खर्च ज्यादा हो जाता है तो मैरी नौकरी के लिए जाती है तो उन्हे हवलदार कि नौकरी दी जाती है। वहाँ पर उसकी लड़ाई हो जाती है। इस तरह से लगातार संघर्ष भरे जीवन के बाद मैरी दोबारा अपने कोच के पास जाती है और वह दोबारा से विश्व चैपिंयन बनती है। फिल्म के कलाईमेक्स (उत्कर्ष) में दिखाया है कि जब वह मैच खेल रही होती है तो उनके बच्चे के दिल का ऑप्रेशन चल रहा होता है। फिल्म में मैरी के जीवन को निर्देशक ने अच्छी तरीके से दिखाया है और 'प्रियंका चौपड़ा' ने भी अच्छा अभिनय फिल्म में किया है। इस फिल्म की समय-सीमा 2 घंटे 01 मिनट की है।

दंगल -:

यह फिल्म वर्ष2016 में सिनेमाघरों में प्रदर्शित हुई थी।'दंगल' एक भारतीय हिन्दी फिल्म है, जिसका निर्माण 'आमिर खान' ने किया है। इस फिल्म का निर्देशन और लेखन का कार्य 'नितीश तिवारी' ने किया है। 'दंगल' में मुख्य किरदार में आमिर खान, साक्षी तंवर, फातिमा सना शेख, जायरा वसीम, सान्या मल्होत्रा और सुहानी भटनागर ने भूमिका निभाई है। यह बायोपिक फिल्म हरियाणा के 'बलांली' गांव के रेसलर 'महावीर फोगाट' और उनकी बेटियों के जीवन पर आधारित है।'महावीर फोगाट' का सपना होता है कि वो अपने देश के लिए रेसलिंग में गोल्ड मैडल जीते, लेकिन परिवारिक स्थितियों के कारण उनका सपना अधूरा रह जाता है।इस लिए महावीर का यह सपना होता है कि उनका यह सपना उनका बेटा पूरा करे लेकिन उनकी पत्नी को कभी बेटा नही होता और चार बेटियां हो जाती है। इस कारण से वह सपना छोड़ आगे बढ़ते हैं व रेसलिंग से दूरियां बना लेते हैं। फिर एक दिन उनकी दोनो बेटियां गीता और बबीता मिलकर एक लड़के कीपिटाई कर देती है। लड़के के परिवार वाले लड़कियों कि शिकायत लेकर 'महावीर फोगाट' के

पास आते है और जब उन्हें पता चलता है कि उनकी बेटियां लड़के को पीट कर आई है तो वह सोचते है कि वह अब अपना सपना बेटियों के जरिए पूरा करेंगे फिर गोल्ड तो गोल्ड होता है चाहे छौरी लावै चाहे छौरा। महावीर फौगाट अपनी रेसलिंग सिखानी शुरू करते है और कुछ दिन में 'गीता बबीता' बहाने बनाती है बाद में जब वह एक दोस्त कि शादी में जाती है तो वह उसे समझाती है कि तुम्हारे पिता तुम्हारे लिए अच्छा कर रहे है। तुम्हे घर के कामों से दूर अच्छी जिंदगी देने कि कोशिश कर रहे है फिर वह दोनों गंभीर रूप से रेसलिंग सीखती हैं और तकरीबन एक साल बाद 'महावीर फौगाट' अपनी बेटी गीता को रोहतक में पहला दंगल लड़वाते हैं और उसके बाद तो गीता और बबीता कई दंगल जीत कर अपनी प्रतिभा दिखाती हैं।'महावीर फौगाट' को जब गीता को राष्ट्रीय स्तर पर तैयारी करवाने के लिए दो महीने का अवकाश ना मिला तो उन्होंने नौकरी ही छोड़ दी और अनेक परेशानियों के बाद भी वह गीता की तैयारी करवाने में लग गए और फिर वह सब जूनियर नेशनल चेंपियन बनी। उसके बाद जूनियर नेशनल चैंपियन बनी और फिर नेशनल चैम्पियन बनी। इसके बाद अगला पड़ाव देश के लिए गोल्ड लाने का और उसके लिए गीता को नेशनल स्पोर्ट्स एकेडमी पटियाला जाना पड़ा। वहां जाकर गीता ने अपने पिता के अनुशासन को भुलाकर धूमना, फिल्में देखना और अपने कोच के सिखाई हुई तकनीकों का प्रयोग करना शुरू किया और जब उनके पिता ने उनको सब ठीक करने के लिए बोला तो गीता ने अपने पिता को ही साथ में खेलने के लिए कहा। उम्र ज्यादा होने के कारण उनके पिता उनसे हार गए और गीता ने उनसे दूरी बना ली। इसके बाद'गीता' लगातार खेलों में हारती रही और उसके हाथ लगातार निराशा लगी। अंत में गीता ने अपने पिता से माफी मांगी और उनके पिता ने उनकी एकेडमी से अलग उनका प्रशिक्षण शुरू किया और जब उनकी एकेडमी के कोच को पता चला तो उन्होने इसकी शिकायत उच्च अधिकारियों को कर दी। महावीर फौगाट का एकेडमी में आना बंद करवा दिया गया पर उन्होंने फिर भी अपनी बेटी को प्रशिक्षण देना नहीं छोड़ा व फोन पर उन्होंने पुराने मैचों कि वीडियो देखकर उसे मैच में हारने के कारण बताए और जब खेल शुरू हुए तो र्दशकों में बैठकर गीता का मार्गदर्शन किया यह बात गीता के कोच को पसंद नही आ रही थी तो उनके कोच ने अंतिम मैच में उन्हें धोखे से कमरे में बंद करवा दिया। 2010 में गीता ने दिल्ली कॉमन्वेल्थ गेम में गोल्ड जीता और बबीता ने 51 किलो में सिल्वर मेंडल अपने नाम किया तथा ग्लास्गो कॉमनवेल्थ गेम्स में बबीता ने 55 किलो वर्ग में 2014 में गोल्ड जीता।

सांड की आँख -:

सांड की आँख फिल्म को 2019 में प्रदर्शित किया गया था यह एक भारतीय बायोपिक फिल्म है, जिसका निर्देशन 'तुषार हीरानंदानी' द्वारा किया गया है और अनुराग कश्यप, रिलायंस इंटरटेनमेंट और निधि परमार द्वारा निर्मित किया गया है। इस फिल्म में तापसी पन्नू, भूमि पेडनेकर, विनीत कुमार, प्रकाश झा ने मुख्य किरदार निभाए हैं। फिल्म 'सांड की आँख' दो ऐसी महिलाओं कि कहानी है जो उत्तर प्रदेश के बागपत जिले के जोहरी गांव से संबंध रखती हैं जिनका परिवार बहुत बड़ा है और जिसके मुखिया रतन सिंह तोमर है। वह अपने भाईयों के साथ बैठकर हुक्का पी रहा है और अपने छोटे भाई से उसके परेशान होने के कारण के बारे में पूछता है तब वह प्रकाशी के सपने के बारे में अपने बड़े भाई को बताता है कि प्रकाशी ने मां चंडी के दर्शन करने का सपना देखा है और अगर यह सपना पूरा नहीं होगा, तो उसकी मृत्यु हो जाएगी और इस सपने में एक शर्त भी होती है कि मां के दर्शन करने केवल महिलाएं जाएंगी इस बात पर एक बार सभी पुरुष लोग हंस पड़ते हैं और रतन सिंह कहता है कि सपना कुछ न होता तो प्रकाशी चंद्रो के पास

जाकर बोलती है कि मां ने मेरे सपने में आकर बोला है इनका क्या जाएगा मृत्यु तो मेरे पति कि होगी ना तो फिर रतन सिंह साथ में छोटे बेटे को साथ में लेकर जाने के लिए कहते हैं। तोमर और प्रकाशी तोमर को चंडीगढ़ शूटिंग कंपीटिशन में हिस्सा लेने जाना होता है जिसके लिए वह यह सारी योजना बनाती है फिर यह दोनों महिलाएं डॉ यशपाल के साथ चंडीगड के लिए निकल पड़ती है जब वह शूटिंग प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए पहुंचती है तो सब उनकी वेशभूषा देखकर उनपर हंसने लगते है। फिर दादी जब वहां प्रतियोगिता को जीतती है सब चुप हो जाते हैं जब दादी वहां बंदूक को तैयार कर रही होती है तब उनकी पोती उनकी कहानी को सुनाना शुरू करती है। वर्ष 1958 में जब महिलाओं को फिल्म दिखाई जाती थी तो उन्हे फिल्म को दुप्पटा पहने हुए ही देखना होता था दुप्पटा उतारकर बैठने कि उन्हे अनुमति नहीं थी और घर पर एक ही कमरा था जिसमें तीन परिवार बारी-बारी से रहते थे। सप्ताह में दो-दो दिन दुप्पटा से मुँह ढका रहने के कारण दुप्पटे के भी रंग चयनित थे ताकि कोई समस्या ना हो। देखते ही देखते तीनो का परिवार बहुत बड़ा हो गया और देश में बढती जनसंख्या के कारण सरकार ने पुरूषों कि नसबंदी शुरू कर दी और पुरूष छुपने लगे और तब डॉक्टर घर पर आता है तो ताई को नसबंदी के बारे में बताता है और बताता है कि सरकार इसके बदले में पैसे भी देती है तो दोनों दादियां अपने पति के छुपने का पता पुलिस तक पहुंचा देती है। प्रकाशी तब एक अपने पति के लिए एक कमीज सिलती है तभी वह अपने भाई को कमीज दिखाता है और उसे सिलाई करने कि बात कहता है और रतन कहता है कि हम अब औरतों के पैसे खाएंगे ऐसी बहुत सी परेशानियॉ झेलने के बाद एक दिन डॉ रतन सिंह के घर आता है। वहाँ आकर वह उन्हें शूटिंग के खेल के बारे में बताता है। रतन सिंह सचिन को वहां भेजने के लिए तैयार हो जाता है तो डॉक्टर लडकी को भी भेजने के लिए कहता है ताकि वह खेलों में अच्छा करें और उन्हें सरकारी नौकरी मिल जाए, लेकिन रतन सिंह उसे यह कहकर मना कर देता है कि म्हारी छोरी नौकरी पर ना जाएगी व ब्या करवाके दूसरे घर जावें वह चंद्रो डा की बात को सुन रही होती है। लड़के जब आते है तो इस खेल को गंभीर रूप से नहीं खेलते चंद्रो वहां पहली बार शेफाली को लेकर आती है और उसे प्रोत्साहित करती है खेलने के लिए तो वो डर जाती है तो चंद्रो उसे निशाना मार कर दिखाती है। फिर इसमें प्रकाशी और दूसरी लडकी भी शामिल हो जाती है। वह घर वालो से बचकर खेल का अभ्यास करती है और कई पदक अपने नाम करती है और उनकी बेटीयां आगे के खेलों के लिए चयनित हो जाती है। उन्हें तैयारी के लिए बहार जाना पडता है तब चंद्रो और प्रकाशी अपने घर वालों से लड़कर उन्हें अभ्यास के लिए बहार भेजने कि इजाजत दिलवाती है। डॉक्टार अपनी नई एकेडमी का उदघाटन करता है। उसमें रतन सिंह को मुख्यअतिथि बनाता है तथा उन्हें परिवार सहित बुलाता है। तभी बच्चे दादी को बंदूक चलाने के लिए कहते है तभी खेल के बीच में एक फोन आता है और दोनों ताई खेलों में अंतिम निशाना नहीं लगा पाती और रतन सिंह और उसके भाई चंद्रो और प्रकाशी कि हार सोचकर बहार ढोल बजवाकर नाचने लगती है तभी रत्न सिंह कि पत्नी उसको धमकाती है उसके बाद उनकी एक लडकी सरकारी अफसर बनकर गांव में वापिस आती है और रतन सिंह अपनी गलती महसूस करता है और लिंग भेद करना छोड़ता देता है।

साइना -:

इस फिल्म को 26 मार्च 2021 को रिलीज किया गया था यह हिन्दी सिनेमा की आत्मकथात्मक खेल फिल्म है,इस फिल्म का निर्देशन 'अमोल गुप्ते' द्वारा किया गया है और इस फिल्म को निर्मित फ्रंट फुट पिक्चर्स और भूषण कुमार, कृष्ण कुमार, सुजय जयराज और राशेश शाह द्वारा किया गया है। बैडमिंटन खिलाड़ी 'साइना नेहवाल' के जीवन पर

आधारित इस फिल्म में 'परिणीति चोपड़ा' मुख्य भूमिका में हैं। साइना नेहवाल दो गोल्ड मेडल जीतने के बाद मीडिया से वार्तालाप करते हुए अपनी मां के बारे में बताती है कि जब वह अपनी मां की गर्भ में थी वहीं से उन्होंने मंत्र पड़ना शुरू कर दिया था। साइना नेहवाल कि मां भी एक बैडमिंटन खिलाडी थी उनकी मां ने उनके पिता को बैडमिंटन कि कोचिंग के लिए पता करने के लिए कहा और उन्होंने आकर कहा कि लाल बहादुर शास्त्री स्टेडियम घर से 25 किलोमिटर दूर है, तो उसकी मां बस का किराया लेकर साइना के साथ वहां चली गई। वहां पहुंचने के बाद साइना कि मां ने जब कोच से बात की तब उसने कहा कि कैंप में जगह नही है तो साइना कि मां ने बल्ला देकर साइला को खेल खेलने भेज दिया। एक कोच उसको आकर धमकाने लगा तब दूसरे कोच ने उन्हें आकर धमका दिया तब उन्होंने साइना को कैंप के लिए चयनित कर लिया और साइना तीन बजे सुबह उठकर अभ्यास करने लगी। अंडर टेन डबल में साइना ने पहला गोल्ड जीता फिर अंडर 13 सिंगल में साइना ने गोल्ड जीता। अंडर 13 डबल में भी साइना ने गोल्ड जीता एक दिन में चार स्टेट के टाइटल साइना ने जीतकर नया रिकॉर्ड दर्ज किया। राष्ट्रीय रेकिंग में जब साइना दूसरे स्थान पर आई तो उसको उनकी मां ने वही थप्पड़ मार दिया। एक बार साइना के पापा के पास शटल खत्म हो जाती है और जब वह किसी से मांगते है तो उन्हें कोई शटल नहीं देता और एक कोच तो मजाक भी उड़ा देता है। अगले दिन वह शटल लेने के लिए कार्यालय में बहाना बनाकर वहाँ से लोन ले लेते हैं और फिर साइना एक-एक करके अवार्ड जीतती गई और साइना नेशनल चैंपियन बन गई। साइना जब भारत के लिए चुनी गई तब साइना कि मां का उनके लिए समान लेने जाते वक्त उनको बाइक वाला टक्कर मार जाता है और अस्पताल लेकर जाना पड़ता है। साइना कि मां अस्पताल में भर्ती होती है फिर भी साइना खेल का अभ्यास करना नहीं छोड़ती और साइना पहला गोल्ड जीतती है। विदेशी धरती पर फिर उनका कोच उन्हें राजन एकेडमी के बारे में बताता है जो बगैर शुल्क में बच्चों को बैडमिंटन खेलना सिखाएगा लेकिन वह अनुशासन प्रिय इंसान है, तब राजन सबसे पूछते है कि आप में से विश्व का बैडमिंटन चैंपियन कौन बनना चाहता है तो साइना नेहवाल हाथ उठाती तथा इस तरह से फिर अभ्यास शुरू होता है। साइना का खाने की योजना बदली जाती है और फिर वह कोच से प्रार्थना करती है सीनियर के साथ टूर्नामेंट खेलने की और वह पहली भारतीय खिलाड़ी बनी जिसने फिलिंपस ओपन जीता साइना वापिस आकर गुरू से मिलने जाती है। मीडिया को न देखते हुए फिर उनसे उनके गुरु मीडिया से मिलने के लिए कहते हैं। साइना को अपने दोस्त कश्यप के साथ प्यार हो गया था और साइना का खेल से फोकस हट गया था। जो बात बाद में उनको कोच ने समझाया। उन्होंने कहा और साइना ने उससे दूरी बना ली और साइना ने भारत के लिए 2010 में कामनवेल्थ खेलों में पहला गोल्डमेडल भारत के लिए जीता और 2012 में ब्राउंज मेडल जीता और साइना विज्ञापन में एक्टिंग करने लगी जो उनके कोच को पसंद नही आया। इसके बाद राजन सर ने उनके कोच बदल दिए और साइना का खेल बिगड़ता गया और उनके पैर में चोट लग गई। साइना थोड़ी ठीक होने के बाद फिर कोच से मिलने गई तो साइना और कोच की बात में साइना ने उनकी बात का जवाब देते हुए कहा कि मैं कहती यह एकेडमी तेरे लिए सही नहीं है साइना और साइना हैदराबाद छोड़ कर बैंगलूरू जाकर एक एकेडमी में अभ्यास करने लगी। लगातार कई मैच जीतने के बाद साइना 2 अप्रैल 2015 को विश्व चैंपियन बनी और फिर साइना नेहवाल ने अपने पुराने कोच के पास 2017 में वापस आकर अभ्यास शुरू किया और दा देहत्सु ओपन कॉमनवेल्थ बैडमिंटन में सिंगल और डबल में गोल्ड अपने नाम किया। यह भारत कि एक ऐसी महिला खिलाड़ी है जिसने 24 अलग-अलग टाईटल जीते हैं

शाबाश मिठू -:

'शाबाश मिठू' फिल्म का निर्देशन श्रीजीत मुखर्जी द्वारा किया गया है और इस फिल्म को वायकॉम 18 स्टूडियो द्वारा निर्मित किया गया है। यह एक भारतीय हिंदी भाषा की जीवनी पर आधारित खेल फिल्म है। यह फिल्म भारत की महिला राष्ट्रीय क्रिकेट टीम की पूर्व टेस्ट और एकदिवसीय कप्तान 'मिताली राज' के जीवन पर आधारित है। इस फिल्म में तापसी पन्नू ने मुख्य भूमिका निभाई हैं। इस फिल्म को 15 जुलाई 2022 को रिलीज किया गया था फिल्म की कहानी एक जगह से शुरू होती है जहां एक लडकी खुद को लड़का ही समझती है और उसकी मां एक दिन उसे नृत्य सिखाने के लिए एक शिक्षक के पास ले जाती है ताकि उसमें कुछ तो लड़कियों वाले गुण आ सके। वहां उस लड़की की मुलाकात मिताली से होती है और वो धीरे-धीरे उसे क्रिकेट खेलना सिखाती है एक बार जब सब लड़के छोटे से ग्राउंड में मैच खेलने आते है जहां वह प्रतिदिन मैच खेलते हैं तो वहां लडकियां मैच खेल रही होती हैं और लड़के उनको हटने के लिए कहते हैं तब मिताली कि दोस्त लड़को को मिताली को आउट करके दिखाने के लिए बोलती है और मिताली खेल रही होती है तभी वहां उनके कोच आ जाते हैं और वह मिताली को खेलता हुआ देखते है और उनके घर जाकर मिताली के परिवार उनके खेलने के बारे में बताते है और कहते है अगर यह लड़की अभ्यास करे तो राष्ट्रीय स्तर पर खेल सकती है। मिताली और उसकी दोस्त दोनों को मैदान में बुलाया जाता है और उनकी कोचिंग शुरू होती है एक बार जब मिताली खेलते वक्त बार-बार गलती करती है तो उसके कोच गलती को ठीक करने के लिए जूते में कील लगा देते है ताकि मिताली का पैर ना हिले। मिताली कि दोस्त हर रोज अभ्यास पर घर पर झूठ बोलकर आती है लेकिन जब अंत मे चयनित होने का दिन होता है तब मिताली उसे लेने उसके घर जाती है और वह घर पर नहीं मिलती। मिताली को एक छोटी सी बच्ची आकी एक खत देती है जिसमें लिखा होता है कि मेरा निकाह अब्बू ने 15 साल की उम्र में ही कर दिया है अब मैं और किक्रेट नही खेल सकूंगी और मिताली अपने कोच के पास जाकर रोने लगती है तब कोच मिताली को समझाता है कि यह जिंदगी मैदान की तरह और आपको अगर खूद को साबित करना है तो हर परस्थितियों में खेलना पड़ेगा।कुछ समय बाद उसका चयन राष्ट्रीय स्तर पर हो जाता है पर मिताली के मां और पापा को छोडकर परिवार में कोई खुश नही होता और वह आगे कि तैयारी के लिए चली जाती है। जब मिताली पहली बार मैदान मे अभ्यास के लिए जाने लगती है तो उससे पहले और खिलाड़ी उसकी दवाई चुरा लेते है। उसके आग्रह करने पर भी नही देते बल्कि उससे जबरदस्ती कर उसे क्रिकेट खिलाते हैं वह भी बिना हेलमेट के और उसे गिराने कि कोशिश करते हैं। वहाँ कि मैडम उसे कार्यालय बुलाकर कहती है कि वार्म पर मैच होने वाला है उसमें अच्छा करना नही तो ठीक नही पाओगी यहां और मिताली का कोच उसे समझाता है कि उसे अब कितनों लोगों के संघर्षों और अनुभवों से टकराना है। पहली बार में उसकी कप्तान उसको आगे नहीं लेकर जाना चाहती थी लेकिन उनकी मैडम ने उसके खेल देखते हुए उन्हे आगे भेजा अच्छा खेल खेलने के बाद और सदस्यों का साथ देने के बाद कुछ लोग उसे अपना दोस्त मानने लगे थे। एयरपोर्ट पर समान ज्यादा होने के कारण उन्हें निकालने के लिए बोला जाता है जब मिताली अपना पहला मैच खेलने जाती है तब वहां उसकी शांता मैडम का फोन जाता है और वह कप्तान को बताती है कि मिताली के पहले वाले कोच अब इस दुनिया में नही रहे और मिताली का पहला मैच होने के कारण उसे बताने से मना करती है। लेकिन वह उसे मैच शुरू होने से पहले बता देती है तथा मिताली उन्हे याद करते हुए पहले मैच में ही शतक मारती है। मिताली लगातार आगे बढती है जब एक दिन एक साल के मैच की सूची जारी होती है तो उसमे बड़े कम मैच होते है। जब मिताली इसके लिए आवाज उठाती है तो उसकी कप्तान कहती है कि जो मिल रहा है उसमें खुश रहो। मिताली

बजट के लिए सी आई ए के पास जाने का सुझाव देती है ताकि पैसा मिल सके और एक अच्छा मेल कोच भी जो और अच्छा सीखाकर महिला टीम को अच्छा बना सके। मिताली सबसे युवा महिला कप्तान बन जाती है तथा लगातार मैच जीतते है। एक प्रेस कांफ्रेस में जब मिताली उत्तर दे रही होती है तो एक पत्रकार उनसे जवाब पूछता है कि आपको पुरूषों में पसंदीदा खिलाड़ी कौन है तो मिताली जवाब देती है कि क्या आप यह सवाल पुरुष क्रिकेटर से पूछ सकते हैं कि उनको कौंन-सी महिला क्रिकेटर पसंद है। फिर एक दिन मिताली सीआइए चीफ से टीम के साथ मिलती है तो सीआइए चीफ उनकी पहचान को लेकर बेइज्जती करते है लेकिन मिताली अपनी टीम कि पहचान उनसे करवा देती है। इसके बाद वह क्रिकेट छोडकर घर वापिस आ जाती है और शादी करने के लिए तैयारी करती है। वहां महिला क्रिकेटर लगातार मैच हार रही होती है व कप्तान जो पहले होती है वह दोबारा मिताली को मैच खेलने के लिए फोन करती है। उसकी बचपन की दोस्त जो एक दम गायब हो गई थी और फिर वह अपनी एक दोस्त को भी शादी में से भगाने कि तैयारी करती है पर लड़का पहले ही मान जाता है। मिताली शादी मे पुरानी कप्तान से मिलती है और वह पुरानी कप्तान को अपना आईडल बताती है। महिला विश्व कप के लिए कप्तानी करती है और साथी खिलाड़ियों में जोश भरती है और लगातार मैच जीतते है पर कप नही जीत पाते जब वह भारत लौट कर आते है तब उन्हे प्रधानमंत्री फोन कर उनका साहस बढ़ाते हैं। वह कहते है कि आपने कप जीता या ना जीता आपने सारे हिंदुस्तान का दिल जरूर जीत लिया है।

निष्कर्ष -:

फिल्में अभिव्यक्ति का बहुत अच्छा माध्यम हैं। फिल्में मुख्यतः दो प्रकार की होती है काल्पनिक और अकाल्पनिक जो समाज पर अपने संदेश के द्वारा एक गहरा प्रभाव छोडती है। एक तरफ जहां वर्ष 1913 में फिल्मों में भूमिका निभाने के लिए महिलाएं नहीं मिलती थी वही आज तकरीबन 110 साल बाद महिलाओं के जीवन पर फिल्में बनाई जा रही है और आज फिल्मो के कारण भारत के सामाजिक ढांचे में बहुत सारी चीजों में समय अनुसार बदलाव देखने को मिला है। अकाल्पनिक फिल्में जो वास्तविक जीवन पर बनी होती हैं वह ऐसा ही सकरात्मक बदलाव लाती हैं। फिल्में जो किसी कि जीन्दगी पर आधारित होती है इस शोध में हमनें पांच महिला खिलाड़ियों की फिल्मों को देखा जो उनके जीवन पर आधारित हैं। जीवन में हर महिला ने संघर्ष करके एक बड़ा मुकाम हासिल किया है और कहीं ना कहीं पुरूषों ने भी महिलाओं को आगे बढ़ाने में अहम भूमिका निभाई है। महिला खिलाडियों के जीवन में कोच ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और उन्हें जीवन में संघर्ष करना सिखाया सभी फिल्मों में जितनी महिला विश्व स्तर कि खिलाडी बनी हैं उसके पीछे उन्होंने परिवार कि समस्या से लेकर जीवन में बहुत सारी चीजों का त्याग किया है। चाहे मैरी कॉम हो चाहे मिताली हो या साइना नेहवाल हो या गीता और बबीता या यू पी कि दादी हो जिन्होंने जिन्दगी से लड़कर अपने भविष्य को बदल दिया और लाखों लडकियों के लिए यह सब प्रेरणा का कारण बन चुकी हैं। इन फिल्मों में भावनात्मकता का अहसास है हर फिल्म देखने के बाद ऐसा लगता है जैसे आपके सामने किसी का जीवन चल रहा है भविष्य में यह फिल्में सकरात्मक संचार में या विकास संचार के क्षेत्र में अहम भूमिका निभा सकती हैं।

संदर्भ सूची -:

Badoni, K. (2022, Decembr 22). *10 Women Oriented Bollywood Films Every Woman Should Watch*. Retrieved April 15, 2023, from Meri Sehali: https://www.merisaheli.com/10-women-oriented-bollywood-films-every-woman-should-watch/

filmibeat. (2022, july 15). *शाबाश मिथु (2022)*. Retrieved march 30, 2023, from https://hindi.filmibeat.com/: https://hindi.filmibeat.com/movies/shabaash-mithu/story.html

Gupte, A. (Director). (2021). *Saina* [Motion Picture].

Hiranandani, T. (Director). (2019). *Saand Ki Aankh* [Motion Picture].

https://www.aajtak.in/entertainment/story/saand-ki-aankh-review-taapsee-pannu-and-bhumi-pednekar-strong-film-tmov-968329-2019-10-22, प. (2019, october 22). *बहादुरी-इमोशन्स का दमदार मिक्सचर है तापसी-भूमि की फिल्म https://www.aajtak.in/entertainment/story/saand-ki-aankh-review-taapsee-pannu-and-bhumi-pednekar-strong-film-tmov-968329-2019-10-22*. Retrieved March 30, 2023, from https://www.aajtak.in/: https://www.aajtak.in/entertainment/story/saand-ki-aankh-review-taapsee-pannu-and-bhumi-pednekar-strong-film-tmov-968329-2019-10-22

Hurbis-Cherrier, M. (2007). *Voice & Vision A Creative Approach to Narrative Filmmaking.* US: Taylor & Franci.

Kumar, O. (Director). (2014). *Mary Kom* [Motion Picture].

Mukherji, S. (Director). (2022). *Shabaash Mithu* [Motion Picture].

sisodiya, p. (2014, september 5). *NDTV इंडिया*. Retrieved 4 30, 2023, from ndtv.in : https://ndtv.in/filmy/movie-review-of-mary-kom-659628

Tiwari, N. (Director). (2016). *Dangal* [Motion Picture].

VASHISTH, M. (2019, October 21). *Saand Ki Aankh Movie Review: तापसी पन्नू और भूमि पेडणेकर का 'अचूक' निशाना, मिले इतने स्टार.* Retrieved march 30, 2023, from https://www.jagran.com/: https://www.jagran.com/entertainment/reviews-saand-ki-aankh-movie-review-taapsee-pannu-and-bhumi-pednekar-hits-the-bulls-eye-directed-by-tushar-hiranandani-know-the-stars-19687531.html

आलेख. (2019, Feburary 23). *भारतीय सिनेमा में 'समांतर' और 'नई लहर (न्यू वेव)' सिनेमा का स्वरूप.* Retrieved march 30, 2023, from https://m.sahityakunj.net/: https://m.sahityakunj.net/entries/view/bhartiya-cinema-mein-samaantar-aur-nai-lahar-cinema

डेस्क, स. च. (2016, december 22). *सिने चिट्ठा.* Retrieved 03 30, 2023, from www.cinechittha.com: https://www.cinechittha.com/2016/12/dangal-movie-review.html

ताम्रकर, स. (2014, नवंबर 10). *webdunia हिंदी*. Retrieved 03 30, 2023, from webdunia.com: https://hindi.webdunia.com/bollywood-movie-review/mary-kom-movie-review-114090500033_1.html

बुले, र. (2021, march 26). *Saina Movie Review: साइना में ड्रामा कम और इमोशन हैं ज्यादा, परिणीति का परफॉरमेंस करता है प्रभावित.* Retrieved March 31, 2023, from https://www.abplive.com/: https://www.abplive.com/entertainment/movie-review/saina-nehwal-biopic-review-parineeti-chopra-movie-saina-1835081

मिश्रा, स. (2016, December 22). *navbharattimes*. Retrieved march 30, 2023, from https://navbharattimes.indiatimes.com/: https://navbharattimes.indiatimes.com/entertainment/movie-review/dangal-movie-review-in-hindi/moviereview/56101156.cms

यमन. (2022, july 15). *फिल्म रिव्यू: शाबाश मिथु*. Retrieved 12 31, 2023, from https://www.thelallantop.com/: https://www.thelallantop.com/entertainment/post/shabaash-mithu-movie-review-starring-taapsee-pannu-vijay-raaz-directed-by-srijit-mukherji

शुक्ल, प. (2021, march 26). *Saina Movie Review: चैंपियन बनने के लिए जरूरी हैं ये सारी बातें, साइना की बायोपिक से समझिए खास मंत्र*. Retrieved march 31, 2023, from https://www.amarujala.com/: https://www.amarujala.com/photo-gallery/entertainment/bollywood/saina-movie-review-by-pankaj-shukla-naisha-kaur-bhatoye-parineeti-chopra-meghna-malik-amol-gupte

हिन्दी सिनेमा. (2021, feburary 11). Retrieved march 29, 2023, from https://bharatdiscovery.org/: https://bharatdiscovery.org/india/%E0%A4%B9%E0%A4%BF%E0%A4%A8%E0%A5%8D%E0%A4%A6%E0%A5%80_%E0%A4%B8%E0%A4%BF%E0%A4%A8%E0%A5%87%E0%A4%AE%E0%A4%BE